ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(5): 181-182
www.allresearchjournal.com
Received: 08-03-2016
Accepted: 09-04-2016

प्रा. अनिल प्रभाकर निकम
(इतिहास विभाग), कै.म.दि.सिसोदे कला तथा, वाणिज्य महाविद्यालय, नरडाणा ता.शिंदखेडा जि.धुळे

Correspondence
प्रा. अनिल प्रभाकर निकम
(इतिहास विभाग), कै.म.दि.सिसोदे कला तथा, वाणिज्य महाविद्यालय, नरडाणा ता.शिंदखेडा जि.धुळे

आंदोलन के प्रेरणा (स्त्रोत) स्थान धार्मिक तथा सामाजिक आंदोलन

प्रा. अनिल प्रभाकर निकम

प्रास्ताविक

भारत को पारतंत्र से मुक्ती दिलाने के लिए शुरु में १८५७ में सब एक होकर ब्रिटीश सत्ता को विरोध करने का प्रयत्न हुआ (ब्रिटीश सत्ता के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयत्न हुआ) किंतु इसमें भारत वासियों को असफलता मिली ब्रिटीशों के अत्याधुनिक लष्करी ताकद के सामने भारतीयों के पुराणे अस्त्र-शस्त्र बेकार रहे,और उनकी असफलता का यह कारण हो सकता है बिटीश लोगों को जबकि १८५७ के विद्रोह में सफलता मिली थी तबभी इस विद्रोह से वे पूरी तरह से भयभित हुए थे इस्ट इंडिया कंपनी का कारोबार समाप्त होकर भारत के राज्य कारोबार की सत्ता-सुत्र ब्रिटीश सरकार के हाथ में थी १८५८ का जो कानून बना उसने भारतीय जनता को बहुत सारे आश्वासन दिये तथा इसी काल में भारत का गव्हर्नर जनरल के पद पर ब्रिटीश अधिकारी के नियुक्ती की घोषणा की गई नियुक्ती का ऐलान किया गया |

पारतंत्र में जी रहे राष्ट्र को आजादी की इच्छा होना स्वाभाविक है भारत कें युवको नें अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के कारण युरोप का इतिहास तथा बहुत सारे गुण अवगत हुए उनके विचारोंपर गहराई से परिणाम हुआ यही उनकी इच्छा आजादी प्राप्ती का कारण बनी किंतु केवल शिक्षा हासिल करने सें आजादी नहीं मिलने वाली तो भारतीय समाज जो अनपढ है, परंपरा रुढीयों में जकडा हुआ है सामाजिक तथा धार्मिक जागरण होना जरुरी है ऐसा सोच ने पर आगे सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन शुरु हुआ|

राजाराम मोहन रॉयजीने ब्राम्हो समाज को स्थापित कर उसके माध्यम से भारतीय जनता के मन में एक नवचैतन्य निर्माण किया यह एक ईश्वर पर विश्वास करनेवाली संस्था थी डॉ.ॲनी बेझेन्ट ने लिखा है की, राजाराम मोहन रॉय में एक अद्‌भुत शक्ति थी उन्होने यह विश्वास से समाज में स्थित जातिभेद नष्ट करने का प्रयास किया नव युवकों में नवचैतन्य का वातावरण निर्माण किया उनमें धार्मिक आजादी की प्रेरणा निर्माण की

ब्राम्हो समाज के सिद्धान्त नियम

१. ईश्वर एक है तथा वह सारे गुणों का भांडार है
२. हरेक को पूजा-अर्चा करने का अधिकार है
३. पाप का विनाश कर उसके लिए पछतावा यही मोक्ष का मार्ग है
४. परमेश्वर को किसी भी स्वरुप का आकार नहीं इसलिए मूर्तिपूजा नहीं

ब्राम्हो समाज के सामाजिक सिद्धान्त

१) समाज में स्थित जातिभेद नष्ट करना, उँच-नीच को मानना अपनी उन्नती के लिए घातक है अतः उसे नष्ट करना चाहिए
२) समाज में वंश परंपरागत चली आई अनिष्ठ रुढी-परंपराओं को नष्ट करना चाहिए
३) विधवा स्त्री को दूसरा विवाह करने की इजाजत मिलनी चाहिए
४) बाल विवाह पद्धती को बंद करना चाहिए
५) बहू-विवाह पद्धति का विरोध करचा चाहिए
६) संतिप्रथा को बंद करना चाहिए

राजाराम मोहनरायजी ने ब्रिटीश सरकार के भारत के सामने भारतीय लोगों के प्रश्न प्रस्तुत करने का प्रयास किया ! भारत के युवकों का संगठन कर राजकीय आंदोलन छेडने का मार्ग दिखाया भारतीय समाज को निद्रावस्था से जगाकर दिशाहीन समाज को एक नई दिशा दिखाई राजाराम मोहनरॉयजी को आधूनिक भारत का अग्रदूत कहा जाता है

राजाराम मोहनरायजी की मत्यु के बाद ब्राम्हो समाज का नेतत्व केशवचंद्र सेन तथा देवेंद्रनाथ ठाकूर ने संभाला एक नई चेतना निर्माण हुई १८६४ में वेद समाज की स्थापना मद्रास में की १८६६ में प्रार्थना समाजाची स्थापना हुई

स्वामी दयानंद सरस्वतीजी ने १८२८ में आर्य समाज की स्थापना की स्वामी दयानंद सरस्वतीजी वेदों की तरफ लौट आने का मार्ग बताया स्वामी दयानंद सरस्वतीजी समाजसुधारक तथा देशभक्त थे राष्ट्र का जीवन शक्ती को उन्होने प्रयत्न किया स्वामी दयानंदजी ने पहचाना था की, धार्मिक जागरण के बिना राजनैतिक चेतना संभव नही इसी कल्पनासे राष्ट्रीयता तथा धार्मिकता का समन्वय कर आर्य समाज की, स्थापना की आर्य समाज के तत्व-धार्मिक सिद्धांन्त-

१) धार्मिक द्रष्टीकोन से उन्होने कहा ईश्वर एक है वह सर्व शक्तिमान है, ईश्वर अनादि तथा अनंत है, उसकी उपासना करनी चाहिए!
२) दैववाद तथा अवतारवाद को विरोध कर मूर्तिपूजा कर उन्होने विरोध किया

३) परमेश्वर की भक्ति के लिए किसी मध्यस्थता की, जरुरत नही
४) वेदों को अधिक महत्व दिया है

सामाजिक सिधान्तः-

१) जाति-पाति का भेदभाव समाप्त करने का अनुरोध किया
२) बालविवाह का विरोध किया
३) विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया
४) वेदों को अधिक महत्व दिया है
५) संस्कृत भाषा के अध्ययन को महत्व देकर,शिक्षासे ज्ञानव्रध्दि होती है ऐसा वे कहते थे

इस तरह आर्य समाज ने भौतिक,धार्मिक,सामाजिक तथा अध्यात्मिक उन्नती कर मानवतावाद का संदेश दिया ब्राम्हनो प्रार्थना समाज की तरह आर्य समाज मर्यादा में न बंधकर देश के अलग-अलग भागो में आर्या समाज की शाखाए स्थापित की गई देश में नवचैतन्य का वातावरण निर्माण हुआ अपनी राष्ट्रभक्ति का आदर सन्मान प्रस्थापित हुआ

स्वामी दयानंदजी की तरह सोसायटी की स्थापना डॉ.ॲनी बेझेंटजी तथा अमेरिकी कर्नल स्काष्ट जीने की, विदेशी होकर भी उन्होने बालविवाह को समाप्त करने का प्रयास किया | हिंदू धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म माना है विधवा पुनिर्विवाह को प्रोत्साहित किया मनुष्य की समानता के आधारपर जाती भेद नष्ट करने का प्रयास किया |

स्वामी विवेकानंद जी ने शिकागो की, विश्व हिंदू परिषद में सहभागी होकर हिंदू धर्म का सच्चा रुप विश्व के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया पूरे विश्व को हिंदू धर्म का महत्व समझाया, पटाया उन्होने रामक्रष्ण मिशन भी स्थापना की

मुस्लिम समाज में ही सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन कर प्रारंभ हो रहा गया था इस दरम्यान वहाली आंदोलन शुरु होकर सर सैय्यद अहमुदजी ने मुसलमान लोगों मे से सामाजिक दोष | खामियाँ दूर करने का प्रयास किया उनमें शिक्षा की रुची निर्माण करने का प्रयास किया | उनके लिए अलिगढ में मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना की |

सारांश :- धार्मिक आंदोलन से देश में सामाजिक रुढी - परंपरा, श्रध्दा, अंधश्रध्दा बुरे रिती-रिवाज बंद करने का प्रयत्न किया श्रेष्ठ चरित्रवान व्यक्तियों ने युवकों में राष्ट्रीयता तथा देशभक्ती की भावना स्थापित करने का प्रयत्न किया आजादी के लिए सब कुछ त्याग करने की क्षमता विकसित की परिणाम स्वरुप राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना हुई पूरे देश में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल होकर देश स्वतंत्र करने की इच्छा निर्माण हुई

संदर्भ

१. हिंदूस्थानच्या स्वातंत्र्य चळवळीचा इतिहास - डॉ. जयसिंगराव पवार
२. भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीचा इतिहास - डॉ. जी.बी.शहा डॉ.सी.एन.पाटील
३. महाराष्ट्रातील समाज सुधारणेचा इतिहास - जी.एस.भिडे एन.डी.पाटील
४. भारतीय राजकीय विचार - डॉ.शुभांगी राणे